विचार बिन्दु

किसी भी हालत में अपनी शक्ति पर अभिमान मत कर, यह बहरूपिया आसमान हर घड़ी हजारों रंग बदलता है। - हाफ़िज़

साहूकारी ब्याज आज भी बड़ी समस्या

आजादी के 78 साल होने को है पर गांवों में आज भी गैर संस्थागत स्रोत से ऋण प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से बहुत बड़ा प्रतिशत ऐसे ग्रामीणों का है जिन्हें 40 से 60 प्रतिशत तक की दर से ब्याज चुकाना पड़ता है। हांलाकि पिछले एक दशक में बैकिंग और संस्थागत ऋण सुविधाओं में तेजी से विस्तार हुआ है। जन धन खातों और संस्थागत ऋण के साथ ही सभी तरह के सरकारी अनुदान की राशि का सीधे खातों में हस्तांतरण से बैंकिंग सेवाएं अब गांवों के लिए दूर की बात नहीं रही। पर इस सबके बावजूद तात्कालिक आवश्यकता व विशेष परिस्थितियों में ग्रामीणों को ज्यादातर रिश्तेदारों, परिचितों, साहूकारों, मित्रों या फिर गैर सरकारी संस्थाओं से ऋण लेना होता है और फिर इन त्रणों पर जो ब्याज लिया जाता है। वह ऋणी की कमर तोड़ने के लिए प्रर्याप्त है। इन हालात में प्रेमचन्द का गोदान का समय हो या आज का कोई खास अंतर देखने को नहीं मिलेगां यह आज का यथार्थ है।

नाबार्ड की हाल ही मार्च, 25 में जारी रिपोर्ट से जहां इस बात का संतोष होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में संस्थागत ऋण प्रवाह का दायरा बढ़ा हैं वहीं यह भी चिंताजनक हालात सामने आये हैं कि गैरसंस्थागत स्रोतों से जरुरत के समय कर्ज प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से करीब साढ़े सात फीसदी लोगों को 50 फीसदी से भी अधिक ब्याजदर से कर्ज चुकाना पड़ रहा है। इससे यह साफ हो जाता है कि एक बार गैरसंस्थागत स्रोत से कर्जदार बने तो फिर कर्ज के मकड़जाल से निकलना असंभव नही ंतो बहुत ही मुश्किल भरा होगा। नाबार्ड की रिपोर्ट को ही आधार मानकर चले तो सितंबर, 24 में जुटाये आंकड़ों के अनुसार 17.6 फीसदी लोग अपनी रुपये पैसे की तात्कालीक जरुरतों को पूरा करने के लिए गैर संस्थागत स्रोतों पर निर्भर है। हालाकि इसमें करीब साढ़े तीन फीसदी का सुधार है पहले 21.1 प्रतिशत ग्रामीण अपनी ऋण जरुरतों को पूरा करने के लिए गैर संस्थागत स्रोतों पर निर्भर थे। फिर भी हमारी ग्रामीण संस्कृति की इस खूबी की सराहना करनी पड़ेगी कि आज भी 31.7 प्रतिशत रिश्तेदार या परिचित ऐसे हैं जो दुःखदर्द में भागीदार बनते हैं और ऐसे समय में उपलब्ध कराये गये रुपये पैसे पर किसी तरह का ब्याज नहीं लेते। हांलाकि रिश्तेदारों या परिचितों से इस तरह की रुपये पैसे की आवश्यकता कुछ समय के लिए ही होती है और समय पर लौटा दिया जाता है। यह भी नाबार्ड द्वारा जारी रिपोर्ट से ही उभर कर आया है।

दरअसल चाहे ग्रागीण हो या शहरी तात्कालीक आवश्यकताएं आ ही जाती है जिनके लिए तत्काल रुपये पैसे की आवश्यकता होती है। अन्य कोई सहारा नहीं देखकर व्यक्ति इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिश्तेदार, परिचित, साहूकार, दोस्त, कमीशन एजेंट या रुपये पैसे उधार देने वाले लोगों के सामने हाथ पसारते हैं। अब इनमें से एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो व्यक्ति की मजबूरी का फायदा उठाने में किसी तरह का गुरेज नहीं करते और हालात यहां तक हो जाते हैं कि मजबूरी का फायदा उठाते हुए 50 से 60 प्रतिशत तक ब्याज लेने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाते। हांलाकि ऐसे लोगों का प्रतिशत या संख्या कम है। पर इसे सिरे से नकारा नहीं जा सकता। रिपोर्ट के अनुसार ऋण लेने वाले करीब 40 फीसदी ग्रामीणों को 15 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक के बीच में ब्याज का चुकारा करना पड़ता है।

0.9 प्रतिशत को 60 प्रतिशत या इससे अधिक तो 6.6 फीसदी को 50 प्रतिशत से अधिक की ब्याजदर पर लिए गए ऋणों का चुकारा करना पड़ता है। इससे साफ हो जाता है कि आजादी के 75 साल बाद भी सूदखोरों को बोलबारा बरकरार है। हांलाकि संस्थागत ऋणों में भी यदि हम पर्सनल लोन की बात करें तो वह भी करीब 15 से 20 प्रतिशत पर बैठता है और यदि किसी कारण से कोई किश्त बकाया रह गई तो फिर पेनल्टी दर पेनल्टी का सिलसिला काफी गंभीर व कर्ज के मकड़जाल में फंसाने वाला हो जाता है।

एक बात और शहरों और ग्रामीण इलाकों में कुछ लोगों या संस्थाओं द्वारा दैनिक आधार पर पैसा कलेक्शन करने और दैनिक आधार पर ही ऋण देने का कार्य किया जाता है। इस तरह के लोगों या संस्थाओं द्वारा भले ही दैनिक आधार पर दस रुपये के ग्यारह रुपये शाम को देना आसान लगता हो पर इस किश्त का चूकना और मासिक आधार पर गणना की जाये तो यह बहुत मंहगा होने के साथ ही जरुरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाने से कम नहीं है। रोजमर्रा का काम करने वाले वेण्डर्स इस तरह की श्रेणी में आते हैं।

एक बात और शहरों और ग्रामीण इलाकों में कुछ लोगों या संस्थाओं द्वारा दैनिक आधार पर पैसा कलेक्शन करने और दैनिक आधार पर ही ऋण देने का कार्य किया जाता है। इस तरह के लोगों या संस्थाओं द्वारा भले ही दैनिक आधार पर दस रुपये के ग्यारह रुपये शाम को देना आसान लगता हो पर इस किश्त का चूकना और मासिक आधार पर गणना की जाये तो यह बहुत मंहगा होने के साथ ही जरुरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाने से कम नहीं है। रोजमर्रा का काम करने वाले वेण्डर्स इस तरह की श्रेणी में आते हैं।

खैर यह अलग बात है पर कहने को चाहे 40 प्रतिशत ही हो पर इनके द्वारा 20 प्रतिशत से 60 प्रतिशत की ब्याजदर से ब्याज राशि वसूलना किसी भी तरह से सभ्य समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता। हांलाकि देश में संस्थागत ऋण उपलब्धता बढ़ी है पर आज भी ताजा रिपोर्ट के अनुसार 17.6 प्रतिशत ग्रामीणों का साहूकारों या अन्य स्रोतों पर निर्भर रहना उचित नहीं माना जा सकता। यदि ब्याज दर 20, 30, 40 या 50 प्रतिशत होगी तो प्रेमचंद के गोदान या इसी तरह की साहूकारी व्यवस्था व आज की व्यवस्था में क्या अंतर रह जाएगा। इतना जरुर है कि रिश्तों की डोर आज भी मजबूत है और इसकी पुष्टी नाबार्ड की रिपोर्ट करती है कि ग्रामीण क्षेत्र में 31.7 प्रतिशत कर्जदार रिश्तेदारों और परिचितों पर निर्भर है और यह लोग रिश्तों का लिहाज करते हुए जरुरत के समय एक दूसरे का रुपया पैसा देकर सहयोग करते हैं और बदले में किसी तरह का ब्याज नहीं लेते। आने वाले समय में भी हमें रिश्तों की इस डोर को मजबूत बनाये रखना होगा और सरकार को आगे आकर एक सीमा से अधिक ब्याज वसूलने वालो पर सख्ती दिखानी होगी। सूदखोरी के इस मकड़ जाल को नष्ट करना ही होगा।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राशिफल शनिवार 12 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्रमास शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि, शनिवार विक्रम सम्वत 2082, हस्त नक्षत्र दिन 6.08 तक, व्याधान योग रात्रि 840 तक, विष्टिकरण सायं 4.37तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः – सूर्य–मीन, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–कर्क, बुध–मीन, गुरु–वृष, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में संचार करेगा।

यमघट योग सूर्योदय से सायं 6.08 तक है। भद्रा सायं 4.37 तक रहेगी। आज चैत्र पूर्णिमा सत्यपूर्णिमा है वैशाख स्नान आरम्भ होगा। आज श्री हनुमान जन्मोत्सव, मन्वादि, सर्वदेव दमनोत्सव है जैन ओली समाप्त होगी।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7.44 से 9.14 तक, चर 12.28 से 2.02 तक, लाभ–अमृत 2.02 से 5.11 तक

राहूकालः 9.00 से 10.30 तक सूर्योदय 5.56 सूर्यास्त 6.53

मेष
व्यक्तिगत पारिवारिक परेशानियां दूर होने लगेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा । विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

सिंह
आर्थिक–वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अनुबन्ध प्राप्त होंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता–सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अथितियों का आगमन रहेगा।

वृष
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
व्यावसायिक सम्पर्क बनेगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव है।

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।

मिथुन
घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधायें बडेगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
घर– गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग–दौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है।

वृश्चिक
आर्थिक–वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच विचार हो सकता है।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन मौजमस्ती के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

संत पीपाजी ने धर्म की अलख जगाई

12 अप्रैल को पीपा जयन्ती पर विशेष.........

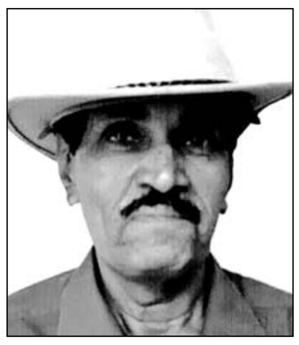

मिश्रीलाल पंवार

राजस्थान के झालावाड़ से थोड़ी दूर गागरोन गढ़ नाम का एक सम्प्रद्धशाली नगर था। करीब सात सौ वर्ष पूर्व वहां नरेश कड़वा राव खिंची राज करते थे। राजा कड़वा राव खिंची दानवीर तथा धर्मार्थ प्रवर्ती के कुशल साशक थे। आदि देवी माता भगवती के परम भक्त थे। साधु संतों की सेवा में सदैव तत्पर रहते। उनकी पत्नी का नाम "लक्ष्मीवती " था। वे भी पति की भांति धार्मिक संस्कारों वाली महिला थी। एक बार रानी की तबीयत बिगड़ी। राज्य वैद्य ने जांच के बाद बताया कि महारानी जी गर्भ से है। वैद्य राज की बात सुनकर पूरे महल में खुशियां छा गई। नौ माह बाद चैत्रीय पूर्णिमा को शंख बजाने लगे। मन्दिरों ढोल, नगाड़े और घंटियां भी बज उठी। देवतागण आकाश मार्ग में पुष्पों की वर्षा करने लगे। अचानक ही महल से एक शिशु के रोने का स्वर सुनाई दिया। पता चला महारानी जी ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया है। देवतागणों ने पुष्प वर्षा कर नवजात शिशु का स्वागत किया। सूखे कुएं और तालाब मीठे पानी से लबालब हो उठे। मुरझाए पेड़ पौधे खिल उठे। पूरे गागरोन वासियों में खुशी की लहर दौड़ गई। घर घर दीपक जलाए गए। महाराजा ने दास दासियों को उपहार देने के लिए खजाना खोल दिया। दाईयों ने बताया कि इतना तेजस्वी और सुंदर शिशु हमने आज तक नहीं देखा। राज पंडितों ने ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन कर राजकुमार का नाम प्रताप सिंह रखने की सलाह दी। राज ज्योतिषी के बताए अनुसार विधि विधान से राज कुमार का नामकरण किया गया। इस मौके देश भर के क्षत्रिय राजाओं को आमंत्रित किया गया। क्षत्रिय कुल के राजाओं ने शिशु को हीरे मोती से जड़े उपहार भेंट कर शुभकामनाएं दी। ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार संसार में आपका नाम रोशन करेंगे।

राजकुमार प्रताप सिंह बचपन से ही तेज तर्रार थे। उच्च राजसी शिक्षा–दीक्षा के साथ इनकी रुचि आध्यात्म की ओर भी थी। बचपन से ही साहित्य व कला प्रेमी थे। अपनी कुलदेवी में गहरी आस्था थी। वे मां भगवती से प्रत्यक्ष बातें करते थे। युद्ध कौशल में उनका कोई जवाब नहीं था। इस प्रकार धीरे–धीरे समय गुजरता रहा। राजकुमार युवा हुए तो उनके लिए रिश्ते आने लगे। अनेक राजाओं ने अपनी कन्याओं के वर के रूप में प्रतापसिंह को पसंद कर लिया।

इस प्रकार 11 राजकुमारियां उनकी जीवन संगिनी बनी। उन्हीं दिनों युवराज प्रताप सिंह किसी समारोह में भाग लेने टोडारायसिंह नगर गए। वहां हर तरफ प्रताप सिंह की चर्चा होने लगी। प्रताप सिंह को कोई एक बार देख लेता तो उन पर से नजरें हटने का नाम ही नहीं लेती। उनके चेहरे पर सूर्य सा तेज और चन्द्रमा जैसी शीतल आभा दिखाई देती। चलते थे तो लगता था सिंह चला आ रहा है। टोडारायसिंह के नरेश डूंगरसिह की एक

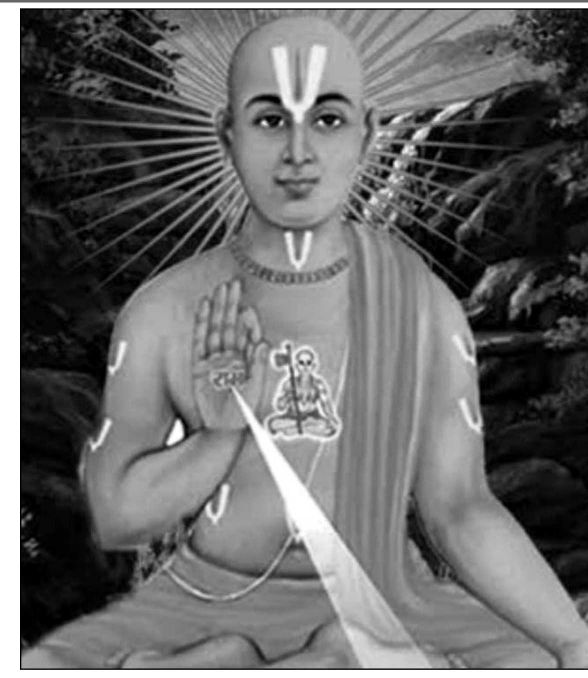

पुत्री थी। जिसका नाम पद्मावती था। पद्मावती धार्मिक संस्कारों वाली कन्या थी। टोडारायसिंह के नरेश डूंगरसिह ने प्रताप सिंह को देखा तो मन ही मन सोचने लगे कि उनकी लाडली बिटिया के लिए प्रताप सिंह से बढ़कर कोई दूसरा वर नहीं मिल सकता। इधर शहर भ्रमण के दौरान नगरवासियों ने राजकुमार प्रताप सिंह को देखा तो उन्हीं की चर्चा होने लगी। धीरे धीरे दासियों के द्वारा यह बात राजकुमारी पद्मावती तक पहुंच गई। दूसरे ही दिन राजकुमारी पद्मावती ने भी समारोह में प्रताप सिंह को देखा तो देखती रह गई। वह मन ही मन राजकुमार प्रताप सिंह को अपना वर मान बैठी।

कुछ दिनों के बाद टोडारायसिंह नगर के नरेश डूंगरसिह ने गढगागरोन के महाराजा कड़वा राव को रिश्ते का संदेश भेजा। महाराजा कड़वा राव ने भी सुन रखा था कि टोडारायसिंह के नरेश डूंगरसिह की पुत्री पद्मावती अत्यंत ही सुंदर, सुशील व धर्मपरायण कन्या है। कुछ औपचारिक व्यवहार के बाद प्रताप सिंह का पद्मावती का लग्न कर दिया गया। महाराजा प्रताप सिंह अपनी सभी रानियों से समान रूप से स्नेह रखते थे। मगर सीता से विशेष स्नेह था। क्योंकि महारानी सीता धर्म परायण तथा पतिव्रता नारी थी। उन दिनों गागरोनगढ़ में हर तरफ खुशियां छाई हुई थी। मगर यह खुशियां अधिक दिन तक नहीं रह सकी। एक दिन राजा कड़वाराव का अचानक ही निधन हो गया। हर तरफ मातम छा गया। उस समय राजकुमार प्रताप सिंह की उम्र मात्र 20 वर्ष की थी। सभी राजदरबारियों ने सभा कर जेष्ठ पुत्र प्रताप सिंह के राज्याभिषेक करने का निर्णय ले लिया। महाराजा कड़वा राव के देहांत के बाद संवत 1400 में युवराज प्रताप सिंह का गागरोन के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। राजपाठ संभालने के कुछ ही समय में उनकी एक कुशल शासक के रूप में पहचान बन गई। उनके राज काल में गागरोन किला एक समृद्ध रियासत बन चुका था। इधर मालवा के मुस्लिम शासकों की बुरी नजर इस पर पड़ी। वे गागरोनगढ पर फतह करने की योजनाएं बनाने लगे।

मुस्लिम शासकों ने गागरोन जीतने की मंशा से हमला किया तो प्रताप सिंह ने उनकी सेना को मुंह तोड जवाब ही नहीं दिया बल्कि खदेड़ खदेड़ कर मारा। फिरोजशाह तुगलक, मलिक जर्दफिरोज व लल्लन पठान जैसे योद्धाओं को पराजित कर पूरे भारतवर्ष में अपनी वीरता का लोहा मनवाया। बाद में मुस्लिम शासकों के मन में प्रताप सिंह के नाम का ऐसा खौफ बैठा कि पलट कर गागरोन की तरफ देखा तक नहीं। कुछ समय बाद महाराजा प्रताप सिंह ने संसारिक राजपाठ तथा संसारिक मोह–माया का त्याग कर दिया। पति के साथ ही सबसे छोटी रानी पद्मावती ने भी संन्यास ले लिया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने प्रताप सिंह को पीपा तथा पद्मावती को सीता नाम प्रदान किया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य से दीक्षा लेकर दोनों जगत कल्याण के लिए देशाटन पर निकल पड़े। भारतभर का भ्रमण करते लोगों में धर्म की अलख जगाई।

-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

'समय आ गया है, हम अपने फूड प्रोडक्ट्स को न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर वर्गीकृत करें'

केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा

उदयपुर, (कासं)। केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत ने शुक्रवार को जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित 20 वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि अमृत पीढ़ी को विकसित भारत के निर्माण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, साइबर सिक्योरिटी, एआई–बेस्ड जीनोम सीक्वेंसिंग, रोबोटिक्स, इंफॉर्मेशन साइंसेज, डेटा साइंसेज, ऑटोमेशन और मेंटल हेल्थ जैसे क्षेत्रों में अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी होगी।

शेखावत ने कृषि के क्षेत्र भावी संभावनाओं और प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत में अब भोजन को मात्र मात्रा में नहीं, बल्कि उसकी न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर मापा जाना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम अपने फूड प्रोडक्ट्स को न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर वर्गीकृत करें। आने वाले समय में भारत की शहरी आबादी का आधा हिस्सा अपना भोजन घर में नहीं, बल्कि इंडस्ट्री से प्राप्त करेगा फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में भारत अब भी पीछे हैं, हम कुल उत्पादन का मात्र 2 फीसदी ही प्रोसेस कर पा रहे हैं।

कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने विद्यापीठ की विकास यात्रा को बताते हुए कहा कि तीन रूपये एवं पांच कार्यकर्ताओं से स्थापित इस संस्थान ने आज वटवृक्ष का रूप ले लिया है जिसका सालाना 60 करोड़ का बजट है और 10 हजार से अधिक विद्यार्थी नियमित रूप से अध्ययनरत है। उन्होंने संस्थान के सफलता का श्रेय विवि के समर्पित कार्यकर्ताओं को दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान भी है इसलिए दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को यह संकल्प दिलाया जाता है कि वे सत्य और न्याय के मार्ग पर चलेगे, समाज और राष्ट्र की सेवा करेंगे, अपने ज्ञान का उपयोग सद्भाव और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए करेंगे।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन ने बताया कि अतिथियों द्वारा पीएचडी धारकों को उपाधियां एवं विभिन्न स्नातक–स्नातकोत्तर परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इस अवसर पर 97 पीएचडी धारकों को उपाधियां प्रदान की गई जिसमें 65 छात्राएं और 101 मेधावी विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए, जिसमें 65 छात्राएं शामिल है। समारोह की शुरुआत में केंद्रीय मंत्री को एनसीसी कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

उदयपुर सांसद मन्नालाल रावत एवं एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. अजित कुमार कर्नाटक ने भी समारोह को संबोधित किया। कुलाधिपति प्रो. भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि समय के साथ शिक्षा के स्वरूप में भी बदलाव करना होगा। रोजगार देने वाली शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली ने बताया कि समारोह के विशेष आकर्षण के रूप में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा गया। उपाधि प्रदान करते समय सभागार तालियों से गूंज उठा। शेखावत ने इस मौके पर संस्था के सामाजिक सरोकारों और सामुदायिक कार्यों को प्रेरणादायी बताया। इस अवसर पर मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया गया। कर्नल विनोद कुमार बांगरवा को भी पीएचडी प्रदान की गई।

समारोह में विधायक दिप्ति माहेश्वरी, निवृति कुमारी मेवाड़, अशोक मेतवाला, डॉ. रशिम बोहरा, भाजपा के जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़, पूर्व विधायक बी. एल. चौधरी, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, वरिष्ट भाजपा कार्यकर्ता प्रमोद सामर, पारस सिंघवी, कुलदीप सिंह, डॉ. सपना श्रीमाली, सोम जारोली, प्रतीक वर्मा, अनिल हरकावत, अजय डांगी सहित विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर सहित शहर कि गणमान्य नागरिक और विद्यार्थी मौजूद थे।

समारोह में मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया।

- **जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से 20वां दीक्षांत समारोह आयोजित**
- **समारोह में 101 मेधावियों को स्वर्ण पदक और 97 को पीएचडी उपाधि प्रदान की**

तेज आंधी ने पाटन कस्बे और आसपास के इलाकों में तबाही मचाई, सैकड़ों पेड़ गिरे

पाटन, (निसं)। शुक्रवार शाम करीब छह बजे अचानक आई तेज आंधी ने पाटन कस्बे और आसपास के इलाकों में जमकर तबाही मचाई। तेज रफ्तार हवाओं ने सैंकड़ों पेड़ों को धराशायी कर दिया, वहीं कई घरों और दुकानों की छतों से टिनशेड उड़कर दूर जा गिरे। तेज आंधी के चलते कस्बे के कई इलाकों में बिजली के पोल और तार टूट गए, जिससे विद्युत आपूर्ति पूरी तरह बाधित हो गई। विशेषकर धांधेला रोड पर एक विशाल नीम का पेड़ बीच सड़क पर गिर गया, जिससे काफी समय तक यातायात पूरी तरह बाधित रहा। स्थानीय लोगों ने मिलकर पेड़ को हटाया, तब जाकर रास्ता सुचारु हो पाया।

कुछ इलाकों में दीवारें भी आंधी के दबाव से दरक गईं। दुकानदारों का कहना है कि उनके प्रतिष्ठानों में रखे सामान को भी नुकसान हुआ है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में कई कच्चे मकान आंधी की चपेट में आकर क्षतिग्रस्त हो गए। बिजली विभाग के कर्मचारियों ने मौके पर पहुंचकर पोल और तारों की मरम्मत का काम शुरू कर दिया है, परंतु देर शाम तक अधिकांश क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो पाई थी। स्थानीय प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे खराब मौसम के दौरान सतर्क रहें और बिजली के टूटे तारों व पेड़ों के पास जाने से बचें।

पाटन सहित आसपास में तेज रफ्तार हवाओं ने सैंकड़ों पेड़ों को धराशायी कर दिया।

- **कई घरों और दुकानों की छतों से टिनशेड उड़कर दूर जा गिरे**

ग्रामीण क्षेत्रों में कई घंटों तक बिजली आपूर्ति बाधित रही।

हनुमानगढ़ में मेघ गर्जन के साथ बारिश हुई

हनुमानगढ़, (निसं)। यहां शुक्रवार को नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम में अचानक बदलाव आया। सुबह से चल रही हवाओं के कारण लोगों को गर्मी का कम एहसास हुआ। दोपहर में आसमान में बादल छाए और मेघगर्जन के साथ तेज हवाएं चलीं। हल्की बारिश ने लोगों को गर्मी से राहत दी।

तेज हवाओं के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कई घंटों तक बिजली आपूर्ति बाधित रही।

हनुमानगढ़, संगरिया और पीलीबंगा क्षेत्र में गर्जना के साथ हल्की बारिश और बूंदाबांदी हुई। इससे मौसम सुहावना हो गया। पिछले एक सप्ताह से जिले में लगातार गर्मी का प्रकोप बना हुआ था। इससे विशेषकर दोपहिया वाहन सवारों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के अनुसार नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले 1–2 दिन तक कुछ क्षेत्रों में दोपहर बाद मेघ गर्जन और आंधी–बारिश की संभावना है। विभाग ने चेतावनी दी है कि 14 अप्रैल को पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके बाद एक बार फिर से हीट वेव की स्थिति बन सकती है।